संत, समाज और कलाकार

कृष्ण गाँधी (24 Jun 2023)

भारतीय परंपरा में संत ज्ञानी माना गया है। संत का ज्ञान जीविकोपार्जन हेतु प्रयुक्त विद्या से एक अलग दर्जे का है। संत ज्ञान समाज सृजन के मार्ग पर प्रकाश डालता है। समाज को कैसे जोड़ें, सुव्यवस्थित करें, व्यक्ति के समाज और प्रकृति से संबंध कैसे हों, समाज सृजन के आधारभूत मूल्य क्या हों, इन बिंदुओं पर संत ज्ञान केंद्रित रहा है। निरंतर गतिशील समाज में बदलती परिस्थितियों के अनुरूप समाज का नित्य नवीन सृजन कैसे हो, इस पर संत समय समय पर समाज को आगाह करते आये हैं। समाज के बीच रहकर आम लोग जैसा सामान्य जीवन बिताने वाले अनेकों संतों ने पिछली सहस्राब्दि में भारत में जन्म लिया। इनमें बसवण्णा, गुरुनानक, कबीर, रविदास, ज्ञानेश्वर, तुकाराम, श्रीनारायण गुरु आदि ने भारतीय समाज पर अपनी अमिट छाप छोड़ रखी है।

संतों का ज्ञान और उनका संदेश समाज तक पहुंचाने के कार्य में कला की बड़ी भूमिका रही है। कला ही वह माध्यम है जिसके द्वारा संत ज्ञान आम लोग अपने मानस में ग्रहण करते हैं । इसका प्रमुख कारण है कला में मानवीय संवेदनाओं को आंदोलित करने की भावनात्मक क्षमता का होना। नौटंकी, रामलीला, कथा, कव्वाली, भजन, कीर्तन के माध्यम से संतों का ज्ञान कलाकारों ने समाज तक पहुंचाया है। अमीर खुसरो, हरिदास, जैसे कई संतों ने स्वयं कलाकार की भूमिका भी निभाई है। भारतीय सौंदर्यशास्त्र की यह विशेषता है कि कला सृजन की प्रक्रिया ईश्वर/प्रकृति की आराधना के रूप में देखी जाती है। अतः कलाकार को संतत्व के पथ पर बढ़नेवाले एक साधक के रूप में देखने का रिवाज़ हमारे देश मे रहा है।

यहाँ सवाल उठता है कि राजसत्ता का संतों और कलाकारों के साथ क्या रिश्ता होता है और क्या होना चाहिए। राजशाही के जमाने में भारतीय शासकों द्वारा संतों और कलाकारों को संरक्षण दिया जाता था। यह नहीं कि मात्र शासक का गुणगान करनेवाले संतों और कलाकारों को ही सत्ता का संरक्षण प्राप्त था। विभिन्न पंथों के संत व कलाकार शासक के संरक्षण के पात्र थे। इसके साथ यह भी एक अहम बात थी कि संत और कलाकार समाज से जुड़े थे, मात्र सत्ता से नहीं। और समाज में भी यह सामर्थ्य था कि वह संतों और कलाकारों को आश्रय और संरक्षण दे सके। उन संतों और कलाकारों को भी समाज संरक्षण देता था जो नैतिक मूल्यों की खातिर सत्ता से टकराने में नहीं हिचकते थे।

आज की परिस्थितियां सर्वथा भिन्न हैं। राजसत्ता और राजनीति ने सामाजिक जीवन के ताने बाने को अत्यन्त कमज़ोर कर दिया है । जहाँ पहले अनेक रियासतें, छोटे बड़े राज्यों के शासक व कुलीन वर्ग संत व कलाकारों को संरक्षण देते थे, आज भारतीय गणतंत्र में एक पंथ विशेष के और सत्ता का गुणगान करनेवाले संत व कलाकार ही सत्ता की कृपा के पात्र हैं। दूसरी ओर समाज स्वराज व स्वाश्रय की परंपरा से भटक कर दलगत राजनीतिक खेमेबाजी की शिकार हो गया है। छोटे से छोटे स्तर पर भी कोई कला-कार्यक्रम स्थानीय राजनीतिक हस्तियों के हस्तक्षेप के बगैर आयोजित नहीं हो पाता है। सत्ता का डर समाज और कलाकार दोनों में व्याप्त है। सच्चा संत तो सत्ता की परवाह नहीं करता है।

अत: आज आवश्यकता इस बात की है कि स्वराज और स्वाश्रय की अपनी परम्परा को समाज सुदृढ करे। समाज में सत्ता का सीमित ही दखल हो, इसका प्रयास हो। संत और कलाकार समाज के ही अभिन्न अंग हैं, उनके ज्ञान और कला के बगैर स्वराज अधिष्ठित समाज का निर्माण असंभव है, इसका बोध हर व्यक्ति को होना होगा। संत और कलाकारों का संरक्षण भी समाज का ही कर्तव्य है, इसे हमें भूलना नहीं है। संत, कलाकार और समाज इनके बीच के संबंध प्रगाढ़ हों, यह हम सब लोगों का ध्येय होना चाहिए।